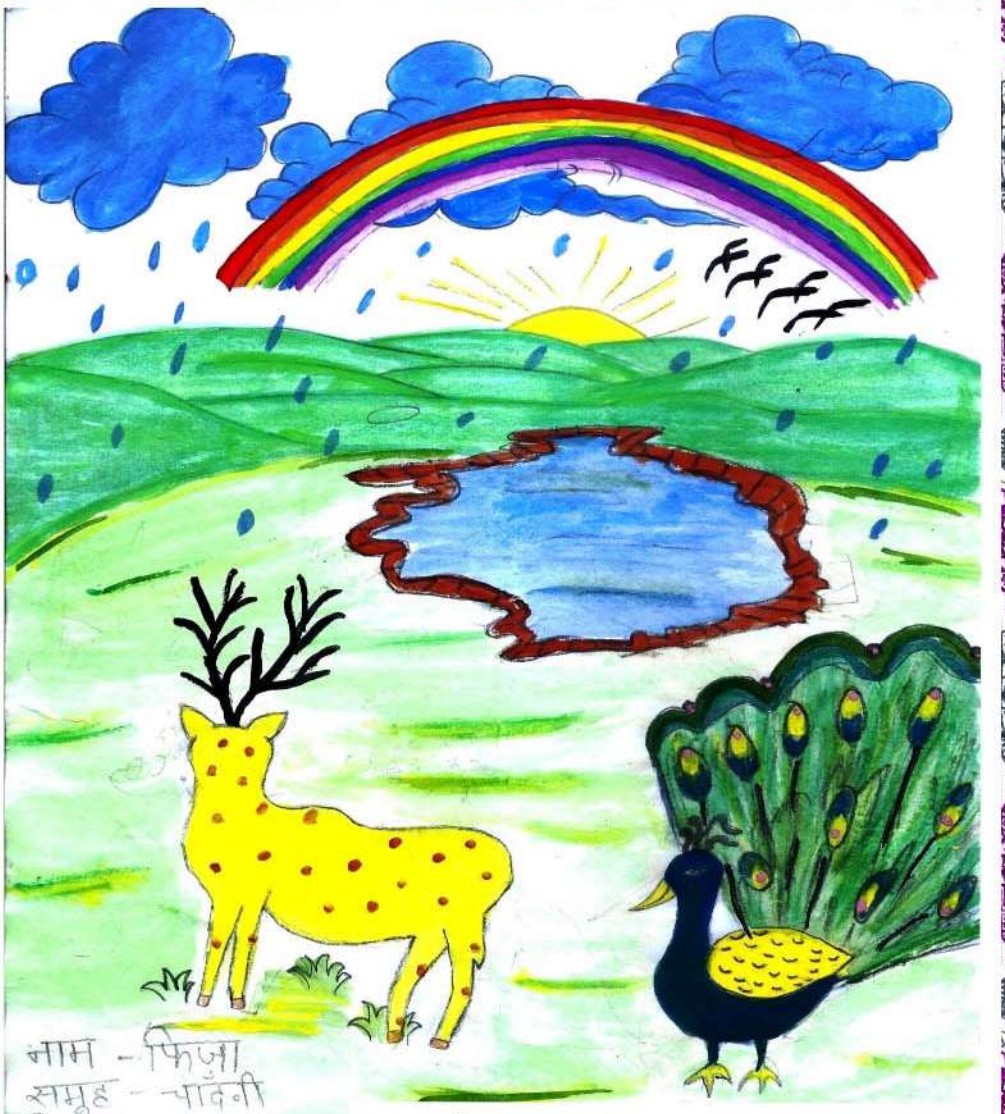

अक्टूर-दिसम्बर, 2021

बातूनी

अंक-125

अक्टूबर-दिसम्बर, 2021

बातूनी

अंक-125

इस अंक में...

- बातूनी की बात 3
- लोमड़ी का झूठ 4
- बागों में फूल खिले 5
- दुलार 6
- नदी 7
- आदमी की सूझबूझ 8
- मैं बनू गाँधी 9
- गाँधी जी सबसे प्यारे 9
- दयावान लड़की 10
- माँ का प्यार 14
- माँ 14
- तितली रानी 11
- शिक्षक–बच्चों के बीच संवाद 12
- तू थी मेरी माँ 15
- केक वाली लड़की और परी 16
- दीवाली आई, दीवाली आई 17
- रामपुर का स्कूल 18
- पेड़ 19
- बच्चे 19
- किसान और बकरा 20
- बारिश 21
- कोयल आई, कोयल आई 22

दिगन्तर विद्यालय द्वारा
प्रकाशित

संपादक मंडल
हेमन्त शर्मा
नौरतमल पारीक
मधु
रेखा जैन
मंजू सिंह
घनश्याम प्रजापत

परामर्श
रीना दास

कम्प्यूटर सैटिंग
ख्यालीराम स्वामी

कम्पोजिंग
गणपत सैन

सम्पर्क (मुख्य कार्यालय)

दिगन्तर
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड़,
जगतपुरा, जयपुर-302017
Email : vidyalay@digantar.org
www.digantar.org

मुख्य आवरण : चाँदनी समूह से फ़िजा
पिछला आवरण चित्र : फोटो कोलाज
बॉर्डर बनाया : मुस्कान कंवर, चाँदनी समूह

बातूनी की बात

प्यारे बच्चो!

नमस्ते, लो मैं आ गई फिर से नई कहानियों व कविताओं के खजाने के साथ। आप लोग मुझे पढ़कर आनंद ले सकते हो और नई–नई रचनाएं बना सकते हो। फिर मुझे भेज सकते हो।

अब तो तुम्हारा स्कूल खुल चुका है। इस कोरोना वायरस के दौरान तुम लोगों को एक नया अनुभव हुआ है। नई बीमारी के बारे में जाना व इसके लक्षणों व सुरक्षा के उपाय भी आप लोगों ने जाने होंगे। इसके बारे में आपकी क्या समझ बनी, वह मुझे लिख कर भेज सकते हो। कोरोना वायरस की तीसरी लहर आने की खबरें अखबार में आने लगी हैं। हम लोगों को सावधान रहने की जरूरत है।

लॉकडाउन के दौरान आप लोगों ने नए तरीके से ऑनलाइन शिक्षण कार्य भी किया। ऑनलाइन शिक्षण कार्य के आपके अनुभव कैसे रहे? आपको कौनसा तरीका ज्यादा ठीक लगा, विद्यालय में आकर पढ़ना या ऑनलाइन पढ़ना। ऑनलाइन शिक्षण में विद्यालय शिक्षण की कौनसी चीजें जो आप नहीं कर पाये और जिनको आप मिस करते रहे हैं। वह सब भी मुझे लिख कर भेज सकते हो।

नया साल 2022 आने वाला है, यह आपके लिए बहुत अच्छा हो।

आपकी अपनी बातूनी।

लोमड़ी का झूठ

एक जंगल में एक चालाक लोमड़ी रहती थी। वह झूठ बोलने में नम्बर वन थी। कोई भी जानवर उसकी बात पर विश्वास नहीं करता था। लेकिन वह झूठ ऐसा बोलती कि बेचारे जानवरों को उस पर विश्वास करना ही पड़ता था। एक दिन लोमड़ी ने जानवरों से कहा कि मैंने एक शेर को जानवरों के बच्चों को खाते देखा है। यह सुनकर जानवर बड़े दुःखी हो गये। जानवर अपने–अपने बच्चों को ढूँढ़ने लगे। सभी जानवरों के बच्चे मिल गये। यह देखकर जानवर बड़े खुश हुए। लोमड़ी हंसती हुई वहां से भाग गई। सभी जानवरों ने कहा कि यह लोमड़ी हमेशा हमें झूठ बोलकर बेवकूफ बनाती रहती है और हम इसकी बातों में आ जाते हैं। आगे से इसकी बात पर कोई विश्वास मत करना। एक दिन जंगल में एक भूखा शेर कहीं से आ गया। लेकिन उसे कोई शिकार नजर नहीं आया। शेर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। कुछ ही देर में वही लोमड़ी अपने बच्चे के साथ आती हुई शेर को दिखाई दी। शेर उनको पकड़ने के लिये दौड़ा। लोमड़ी शेर को देख कर एक झाड़ी में छिप गई। शेर ने लोमड़ी के बच्चे को पकड़ कर जगंल में भाग गया। लोमड़ी झाड़ी से निकल कर जानवरों के पास गई और उसने कहा कि शेर मेरे बच्चे को पकड़ कर ले गया तुम मेरे बच्चे को शेर से छुड़वाने में मदद करो। जानवरों ने हंसते हुए कहा क्यों झूठ बोलती हो लोमड़ी बहिन, तुम कभी सही भी बोल दिया करो। यह सुनकर लोमड़ी बहुत दुःखी होकर रोने लगी। लोमड़ी सभी जानवरों से अपनी झूठ बोलने की आदत को लेकर माफी माँगने लगी। यह सही है कि मैं झूठ बोलती हूँ इसके लिये मुझे माफ कर दो। मैं आगे से कभी झूंठ नहीं बोलूंगी। यह सुनकर जानवरों ने शेर का पीछा करके लोमड़ी के बच्चे को बचा लिया। लोमड़ी अपने बच्चे को सही सलामत पाकर खुश हो गई।

चित्र : किशोर, समूह–रोशनी

– खुशी, समूह–आँगन।

बागों में फूल खिले

बागों में फूल खिले ।
कितने सुन्दर फूल खिले।।
रंग बिरंगे फूल खिले।
भँवरे भी आये, तितली भी आई।।
फूलों का स्वाद ले आई।
शहद भर कर साथ लाती
सुन्दर वह लगती है।
फूल–फूल पर जाती है।
गुन–गुन गाना गाती है।
हंसती–गाती जाती है।

– अलिजा, समूह–आँगन

चित्र : अजिला, समूह–आँगन

दुलार

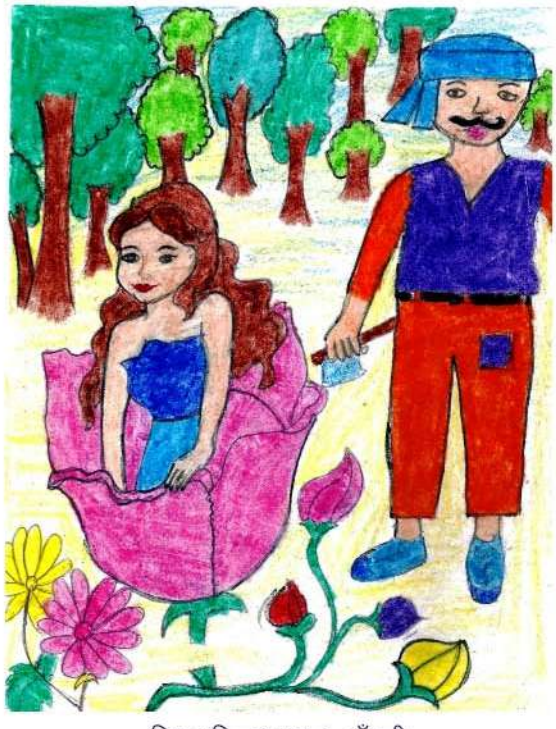

चित्र : फिजा, समूह–चाँदनी

एक जंगल था। जो बहुत ही सुन्दर था। उसमें एक लकड़हारा रोज लकड़ियां काटने जाता था। वह जंगल में जाता तो उसे वहां बहुत ही सुन्दर फूलों के पौधे देखने को मिलते। वह उनको रोज निहारता, लेकिन उन्हें वह तोड़ता नहीं था। जब यह बात उसकी पत्नी को पता चली तो उसने अपने पति से कहा कि तुम रोज जंगल में जाते हो वहां से मेरे लिए फूल लेकर आना। वह अपनी पत्नी से बहुत ही प्यार करता था। इसलिए वह उसे मना नहीं कर पाया। वह दूसरे दिन जब जंगल में गया तो उसने फूलों के पौधों में से एक फूल तोड़ लिया। जब उसने वह फूल तोड़ा तो वह फूल रोशनी से जगमगा उठा। वह फूल अपने आप खुल गया और वह फूल एक छोटी–सी लड़की में बदल गया। वह लड़की इतनी सुन्दर थी, और उसकी त्वचा बर्फ जैसी चमक रही थी। उसके होठ गुलाब की तरह लाल थे। उसने अपनी पत्नी को घर जाकर सारी बात बतायी तो वह बहुत ही खुश हुई क्योंकि उनके कोई संतान नहीं थी। उन्होंने उस लड़की को अपनी संतान के रूप में पालना शुरू कर दिया और खुशी–खुशी रहने लगे।

– फिजा शेख, समूह–चांदनी

नदी

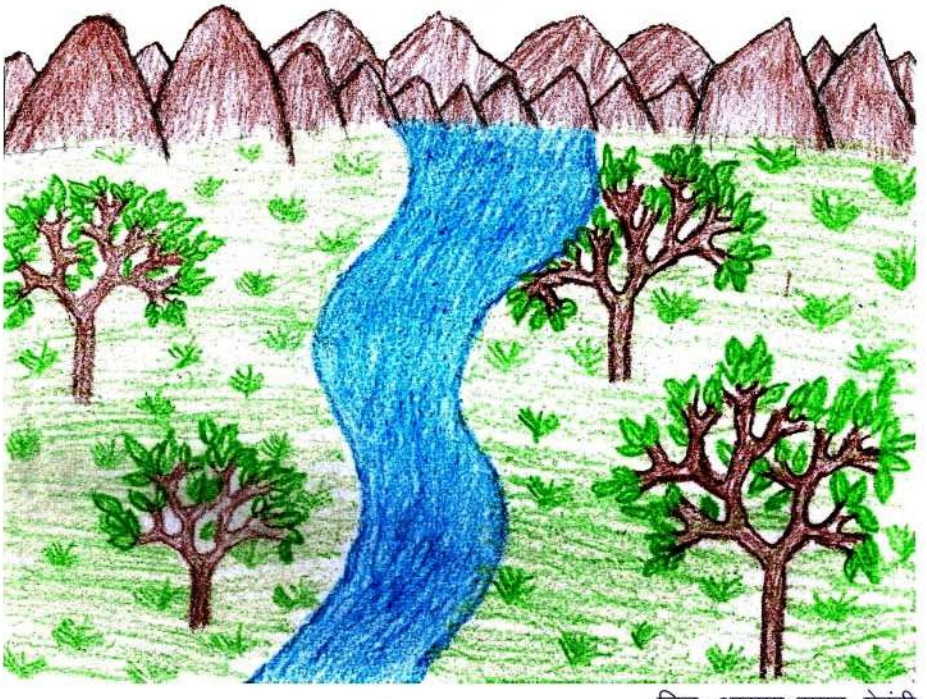

चित्र : आसमा, समूह–मेहंदी

नदी यहां पर मुड़ती है,
फिर चलती ही जाती है,
चलते–चलते सागर को,
आखिर में वह पाती है,
मिलती लंबी राह उसे,
देती सबको पानी हैं,
चलती किसी जगह सीधी,
टेढ़ी चलती कहीं–कहीं,
लहरें उठती जाती हैं,
लेकिन थकती कभी नही है।

– फिजा, समूह–महक

आदमी की सूझ–बूझ

एक जंगल था। उसमें एक शेर रहता था। वह जिस जानवर को देखता उसे भाग कर पकड़ लेता था और मारकर खा जाता था। एक बार वहां एक आदमी आया। शेर ने उसे देख लिया और उसके पीछे भागा। शेर ने उसे पकड़ना चाहा पर नहीं पकड़ पाया। वह आदमी जंगल में ही रहता था। उसकी एक छोटी–सी झोपड़ी थी। वह उसमें रहता था। एक बार उसने सोचा कि इस शेर का कुछ तो करना पड़ेगा। यह सबको परेशान करने लग गया है। वह एक जाल लेकर आया और उस जाल को शेर की गुफा के बाहर बिछा दिया। वह वहीं पास की झाड़ियों में छिपकर बैठ गया। शेर ने उस आदमी को गुफा से छिपते हुए देख लिया। शेर उसको पकड़ने के लिए गुफा से बाहर आया जैसे ही शेर गुफा से बाहर निकला तो वह उस जाल में फंस गया। अब उस आदमी ने जाल में फंसे हुए शेर को कुएँ में फैंक दिया। इस प्रकार उस आदमी ने अपनी समझ से जंगल के सभी जानवरों को शेर का भोजन बनने से बचा लिया और वे सभी जंगल में खुशी–खुशी रहने लगे।

– सोफिया–I, समूह–मेहन्दी

मैं बनूं गाँधी

मैया मेरे लिए मंगा दो धोती खादी की,
जिसे पहन कर मैं नकल करूं गांधी की,
आंखो पर चश्मा पहनूंगी कमर घड़ी लगाउंगी,
छड़ी हाथ में लिए जल्दी–जल्दी आउंगी।
लाखों लोग चले आएंगें मेरे दर्शन पाने को,
बैठूंगी जब अच्छी बात सुनाने को,
मैया मेरे लिए मंगा दो धोती खादी की,
जिसे पहन कर मैं नकल करूं गांधी की।

– फिजा खान, समूह–महक

चित्र : बिलाल, समूह–महक

गांधीजी सब से न्यारे

गांधी जी सबसे प्यारे थे, कहलाते वो राष्ट्रपिता,
पर वह बापू हमारे थे, भगा दिया अंग्रेजों को,
बिना किसी हथियार के, दिला दी हमें आजादी,
अहिंसा के हथियार से, ऐसे बापू को सदैव नमन हमारा,
रहेगा याद हमें बलिदान तुम्हारा।

– सादेका, समूह–महक

दयावान लड़की

एक लड़की थी। वह बहुत ही नेक व दयावान थी। सब गांव वाले उससे प्रेम करते थे। उसका इस दुनिया में कोई नहीं था। वह जंगल में से लकड़ी काटती और उसे बाजार में बेचती। उससे जो पैसे मिलते उसी से वह अपने भोजन की सामग्री खरीदती और खाना बनाती व खाकर सो जाती थी। एक दिन वह जंगल में लकड़ियां काटने जा रही थी। लकड़ी काटते–काटते उसे एक छोटा गुलाब का पौधा मिला। वह उसे अपने साथ घर ले आई। वह पौधा बहुत ही सूखा था। उसने उसमें पानी डाला। पानी डालते ही वह पौधा खिल गया और अचानक उसमें से आवाज आई। पौधे ने लड़की से कहा कि तुम मुझे रोज पानी दो मैं तुम्हे रोज बहुत सारे फूल दूंगा। उन्हें तुम बाजार में बेच आना। लड़की ने वैसा ही किया। वह रोज उस पौधे को पानी देती और वह रोज उसें बहुत सारे फूल देता। जिससे वह लड़की थोड़े दिनों में बहुत ही अमीर हो गई और सभी गांव वालों की मदद करने लगी।

– नाजिया, समूह–मेहन्दी

चित्र : खुशी, समूह–महक

तितली रानी

तितली रानी बडी सियानी
रंग–बिरंगे उसके पंख
आसमान में उड़ती है।
फूल–फूल पर रहती है
हमारे हाथ नहीं आती है
रंग–बिरंगी होती है।
बच्चों को अच्छी लगती है
सबको प्यारी लगती है
सबके मन को भाती है।
आसमान में उड़ती है
सुन्दर सबको लगती है
तितली रानी बड़ी सियानी।
– आसमा, समूह–मेहन्दी

चित्र : सना, रहनुमा; समूह–अमन

शिक्षक एवं बच्चों के बीच परस्पर संवाद

शिक्षक : अच्छा बच्चो! जंगल किसे कहते हैं, क्या आप जानते हैं?

निशा : हां, जंगल वह होता है जहां बहुत सारे पेड़ होते हैं।

शिक्षक : अच्छा तो यहां स्कूल के बाहर खूब सारे पेड़ हैं तो क्या हम इसे जंगल कह सकते हैं?

रयाना : नहीं, यह तो जंगल नहीं है यहां तो मकान भी हैं। जंगल में तो मकान नहीं होते सिर्फ पेड़ और जानवर ही होते हैं।

शिक्षक : तो इसका मतलब जंगल में बहुत सारे तरह–तरह के पेड़ होते हैं, वहां इंसानों के मकान नहीं होते और उसमें जानवर भी होते हैं। तो यह जानवर कैसे होते हैं मतलब क्या बकरी, कुत्ते, भैंस, गाय, ये सब जानवर ?

तमन्ना : नहीं, वहां तो माँसाहारी जानवर होते हैं जैसे शेर, बघेरा, भालू।

शिक्षक : तो क्या जंगल में घास खाने वाले जानवर नहीं होते ?

तन्नू : होते हैं जैसे हिरण हाथी, बंदर, रोजड़ा ये भी होते हैं।

शिक्षक : अच्छा तो क्या हम इन जानवरों को पालते हैं?

अनस : नहीं, ये जानवर तो जंगल में रहते हैं जिन्हें हम पाल नहीं सकते। शेर पालेंगे तो हमें खा ही जाएगा।

शिक्षक : हां यह बात तो है। अच्छा तो यह माँस खाने वाले जानवर और घास खाने वाले जानवर जो कि जंगल में ही रहते हैं। इनको कोई एक नाम से हम बुलाते हैं?

कुलसुम : हां यह सब जंगली है। इन्हें जंगली जानवर कहते हैं।

शिक्षक : और जब घर में पालते हैं वे?

सभी बच्चे : वे तो पालतू जानवर होते हैं।

शिक्षक : यह जंगल हम इंसानों के क्या काम आता है?

बच्चे : जंगल से हम लकड़ियां लाते हैं, जिनसे खाना पकाते हैं, बकरियों को इसमें चराने ले जाते हैं। जंगल में पेड़ होते है जिनसे हमें ऑक्सीजन भी मिलती है।

शिक्षक : अच्छा तो ये जंगल जानवरों के भी काम के हैं क्या?

सादिया : हां, जंगल जानवरों का घर है। जंगल से उनको खाना मिलता है, जंगल के बिना जानवर मर जाएंगे।

समरीना : विवेक जी, रात को हमारे घर के पीछे बघेरा आता है। एक दिन तो वह पीछे वालों का खरगोश भी ले गया और जो अभी नए किरायेदार आए हैं न, उनका कुत्ता भी शेर उठा ले गया था।

शिक्षक : बघेरा हमारे घर में नहीं घुसा है बल्कि हम बघेरा के घर में यानी जंगल में घुस गए हैं। हम इंसानों ने जंगल काट कर यहां मकान और स्कूल बना लिए हैं, अब जब जंगल कट गए तो वहां बघेरे को भरपेट शिकार भी नहीं मिलता है। ऐसे में वह पेट भरने को गांव की तरफ आता है और मजबूरी में उसे ऐसे ही शिकार करना पड़ता है।

शिक्षक : इसलिए जब हम जंगल से लकड़ियां काटते हैं तो हम उनका घर तबाह कर रहे होते हैं। जंगली जानवरों का भोजन बर्बाद कर रहे हैं। साथ ही यदि पेड़ों को काटेंगे तो ऑक्सीजन भी नहीं बनेगी और ऑक्सीजन नहीं होगी तो हम सांस कैसे ले पाएंगे ? ऐसा करके हम अपने लिए भी मुसीबत खड़ी कर रहे हैं। आपको क्या लगता है?

बच्चे : हां हमें जंगल से लकड़िया नहीं काटनी चाहिए और यदि बलीते के लिए लकड़ी लानी भी हो तो सूखी लकड़ियां ही लाएं। हरे पेड़ नहीं काटने चाहिए।

कौशल्या : इसीलिए जंगल में फिरवाल (गार्ड) घूमते हैं। पेड़ काटने वालों को पकड़ते हैं और बकरियां चराने वालों को भी भगा देते हैं।

शिक्षक : हां बिल्कुल सही कहा। हमें अपने और इन जीवों को बचाने के लिए जंगल और पेड़ों की सुरक्षा करनी होगी। इन्हें बचाना होगा तभी हम सब बच पाएंगे।

माँ का प्यार

माँ तो जन्नत का फूल है।
प्यार करना उसका उसूल है।
दुनिया की मोहब्बत फिजूल हैं।
माँ की हर दुआ कबूल हैं।
ऐ! इन्सान माँ को नाराज करना तेरी भूल हैं।
माँ के कदमों की मिट्टी जन्नत की धूल है।
– विष्णु, समूह–मेहन्दी

चित्र : साबिरा, समूह–मेहंदी

प्यारी जग से न्यारी है माँ, अच्छी बाते सिखाती है माँ,
खुशियॉ हमें देती है माँ, मंजिल हमें दिखाती है माँ,
चलना हमें सिखाती है माँ, सबसे प्यारी माँ है अपनी,
दुनिया में सबसे अनमोल है माँ।
– मुन्ना, समूह–मेहन्दी

चित्र : सलमा, समूह–महक

तू थी मेरी माँ

मेरी पहली धड़कन तेरे अन्दर धड़की थी माँ,
आँखें जब खोली पहली बार,
तो सामने तू थी माँ।
मेरे हर सवाल का जो जवाब,
बन जाती वो तू थी माँ।

– पवन पाल, समूह–सावन

केक बनाने वाली लड़की और परी

बहुत समय पहले एक गरीब परिवार रहता था। उसमें एक लड़की थी, लड़की की माँ केक बनाने का काम करती थी। माँ से लड़की ने भी केक बनाना सीख लिया। लड़की बड़ी हुई, लेकिन उसके मम्मी–पापा गुजर गए। अब लड़की दादी के साथ गांव में रहने लगी। लड़की ने सोचा कि मुझे केक बनाना तो आता ही है क्यों न शहर जाकर पैसे कमाए जाएं। वह शहर आकर एक औरत के पास केक बनाने लगी। उसके बनाए केकों की खूब बिक्री होने लगी। लेकिन औरत ने लड़की से कहां कि केक में ज्यादा माल मत लगा, कम खर्च करो और ज्यादा फायदा। लड़की ने औरत को बहुत समझाया, वह नहीं मानी। बल्कि गुस्से में लड़की को काम से निकाल दिया। लड़की गांव लौटते समय जंगल में रास्ता भटक गई। जंगल में उसे एक परी मिली, उसने लड़की से कहा, मैं मुसीबत में हूं, क्या तुम मेरी मदद करोगी ? लड़की बोली, कैसी मदद ? परी ने कहा ऊपर आसमान में दो घर हैं, उनमें से एक में मेरी जादुई छड़ी रखी है, क्या तुम वो ला दोगी ? वहां जाने की सीढ़ी मैं बना कर दूंगी। लड़की जादुई सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर गई। वहां एक घर में जाने लगी तो दूसरे घर से आवाज आई कि तू इस घर में आजा मैं तुझे सुखी रखूंगा। तभी पहले घर से आवाज आई, मैं तुझे सुख और थोडे दुख भी दूंगा। लड़की ने सोचा जिंदगी में सुख–दुख होते ही हैं। तो यह सही कह रहा है। लड़की उस घर में गई और जादुई छड़ी लेकर वापस लौट आई। परी ने खुश होकर कहा कि मैं तुम्हारी ईमानदारी की परीक्षा ले रही थी। परी ने जादुई छड़ी घुमाई तो एक घर बन गया। उसके अंदर सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात थे। परी ने फिर से छड़ी घुमाई तो लड़की की दादी भी वहीं आ गई। लड़की दादी से लिपट गई। परी ने कहा अब से यह घर तुम्हारा है, तुम अपनी दादी के साथ इसमें रहो। लड़की दादी के साथ उस घर में रहने लगी और केक बना कर गरीब बच्चों में बांटने लगी।

–रयाना, समूह–महल

चित्र : रयाना, समूह–महल

चित्र : तराना, समूह–महक

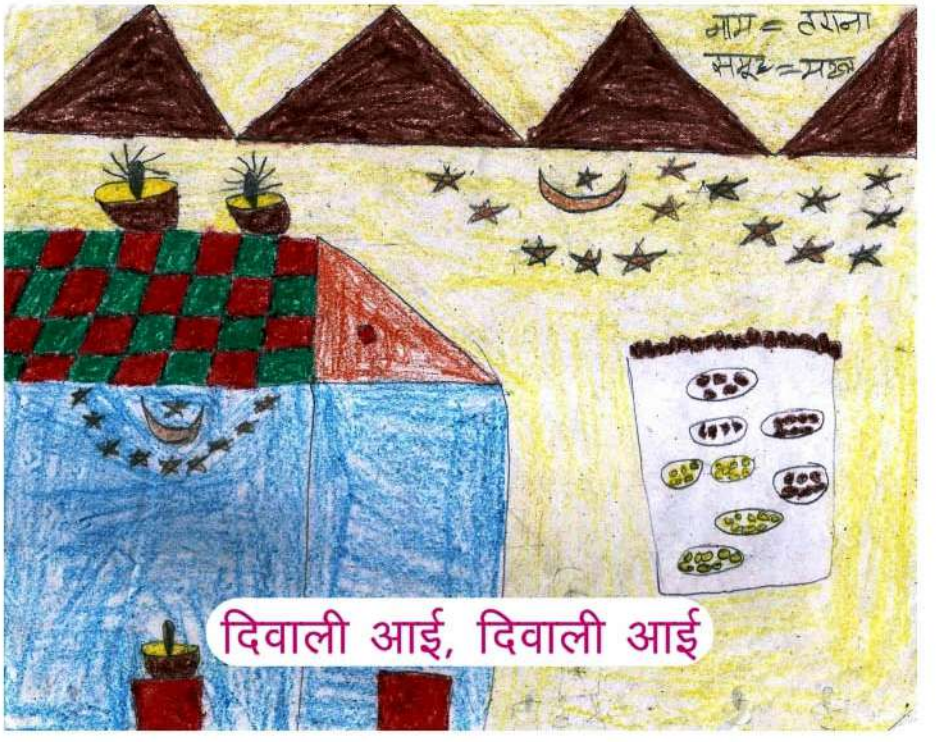

दिवाली आई, दिवाली आई

दिवाली आई, दिवाली आई
सबने खाई खूब मिठाई।
सबने दीयों की माला सजाई
सुम्मी, मुनिया और उनके भाई
मिलकर सबने फुलझड़ी छुड़ाई
बम, पटाखे, अनार, रॉकेट
लाल बमों की लड़ी छुड़ाई
दिवाली आई दिवाली आई
सबके घर में खुशियां छाई।

– तमन्ना, तराना, समूह–महल

रामपूर का स्कूल

एक गांव था। उस गांव का नाम रामपुर था। वहां के सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहते थे। मुसीबत में एक–दूसरे का साथ देते थे। गांव के लोगों का मुख्य काम खेती और पशुपालन करना था। उस गांव में कोई स्कूल नहीं था। काफी दूर के एक गांव में स्कूल था। जहां पर लोग अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते थे। एक दिन सभी ने अपने गांव में स्कूल बनाने का सोचा। फिर सभी ने मिलकर स्कूल बनाना शुरु कर दिया। किसी ने पानी दिया, किसी ने सीमेन्ट तो किसी ने लोहा और किसी ने मजदूरी करके स्कूल तैयार किया। अब सभी बच्चे स्कूल जाने लगे और पढ़–लिख कर आगे बढ़ने लगे। सभी लोग अब खुशी–खुशी रहने लगे।

– समूह–सावन

चित्र : सादिया, समूह–महल

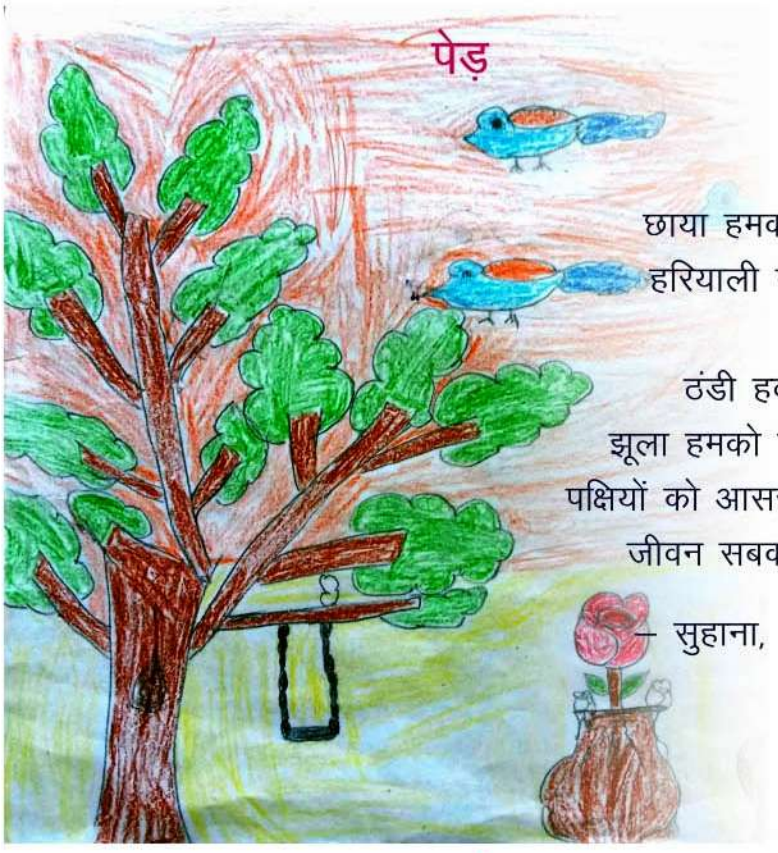

पेड़

छाया हमको देते पेड़
हरियाली फैलाते पेड़

ठंडी हवा देते पेड़
झूला हमको झूलाते पेड़
पक्षियों को आसरा देते पेड़
जीवन सबको देते पेड़

– सुहाना, समूह चंदा

चित्र : सुहाना
समूह–चंदा

बच्चे

बच्चे कितने प्यारे हैं, सारे जग से न्यारे हैं
मन के भोले–भाले हैं, बच्चे प्यारे–प्यारे हैं
दिनभर धूम मचाते हैं, हल्ला–गुल्ला करते हैं
बच्चे कितने प्यारे हैं, मन के सच्चे साथी हैं।
हंसते गाते बच्चे हैं, कितने प्यारे बच्चे हैं
बच्चे तो बस बच्चे हैं।
– जहीर, आसिफ, आरिश समूह चंदा

किसान और बकरा

एक किसान था। उसके पास एक बकरा था। किसान बकरे से बहुत प्यार करता था। वह बकरे की बहुत देखभाल करता था। किसान बकरे को रोज जंगल में चराने ले जाता था। दिनभर उसे हरी–हरी घास चराता और रात को घर ले आता। हरी–हरी घास खाकर बकरा बहुत मोटा–ताजा हो रहा था। एक दिन गांव के सेठ ने बकरे को देखा। उसको मोटा–ताजा बकरा बहुत ही पसंद आया। उसने सोचा अब की बार मैं इस बकरे की कुर्बानी दूंगा। सेठ किसान के पास गया। उसने किसान से कहा कि तुम्हारा यह बकरा मुझे दे दो। मैं इसको बकरा ईद पर कुर्बानी करूंगा। इसके बदले में तुम जो चाहो मैं तुम्हें दे दूंगा। किसान ने सेठ से कहा यह बकरा मुझे मेरे बच्चे से भी ज्यादा प्यारा है। आपने इसके बारे में ऐसा सोचा भी कैसे। किसी भी कीमत पर इसको आपको नहीं दे सकता। आप मुझे माफ कर दो। उसकी बात सुनकर सेठ को बहुत गुस्सा आया। उसने किसान से कहा तुम चाहे जितनी कीमत ले लो पर यह बकरा मुझे दे दो। किसान ने सेठ से कहा मुझे माफ कर दो। मैं आपको बकरा नहीं दे सकता। सेठ को किसान की बात बहुत अच्छी लगी। उसने किसान से कहा तुम बहुत अच्छे इंसान हो। मैंने तुम्हारे बारे में गलत सोचा मुझे माफ कर दो। उसने किसान को गले लगा लिया और उससे माफी माँगी।

– एक एक वाक्य बोलकर बनाई कहानी, समूह–चंदा

चित्र : अजहर, समूह–महल

बारिश

बारिश आई रिमझिम–रिमझिम
मोर नाचे छम–छम, छम–छम
बच्चे नाचे धम–धम, धम–धम
मैं भी नाचू छम–छम, छम–छम
मौसम देखो प्यारा–प्यारा
दिल को भाए प्यारा–प्यारा
मैं भी नाचू छम–छम, छम–छम
बच्चे नाचे धम–धम, धम–धम
बिजली कड़के कड़–कड़, कड़–कड़
बादल गरजे धड़–धड़, धड़–धड़
धड़कन बोले धक–धक, धक–धक
मैं भी नाचू छम–छम, छम–छम

– स्वाति, समूह–मेहन्दी

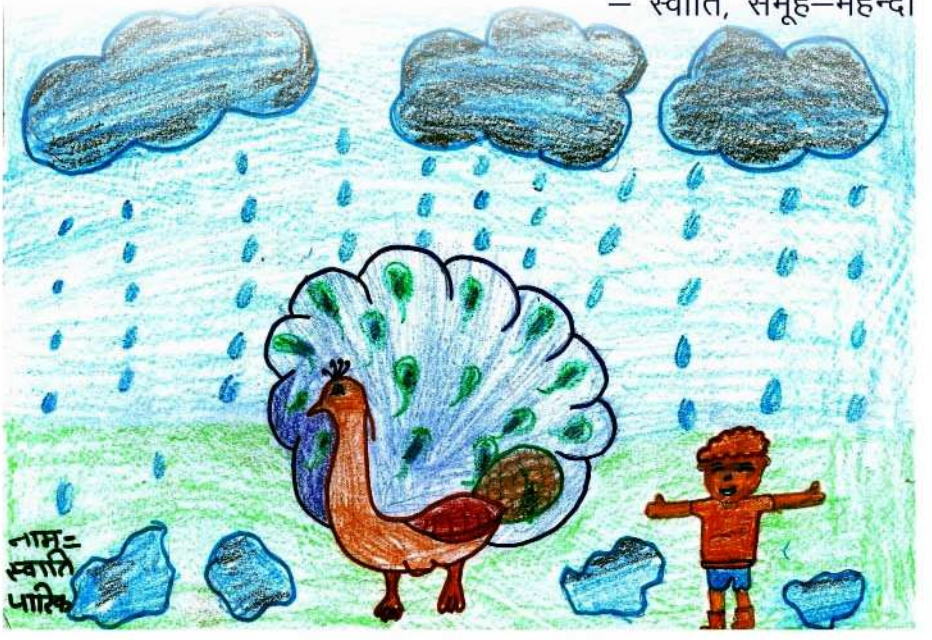

चित्र : स्वाति पारीक, समूह–मेहंदी

कोयल आई, कोयल आई

कोयल आई, कोयल आई ।
देखो बच्चो कोयल आई ।।
गीत सुन्दर गाती आई ।
आसमान से उड़ती आई।।

साथ में अपने बच्चे लाई ।
पेड़–पेड़ पर घर बनाई ।।

कुंहू–कुंहू की धुन बनाई ।
आओ बच्चो कोयल आई ।।
कोयल आई, कोयल आई ।
देखो बच्चो कोयल आई ।।

– सोफिया, समूह–आँगन

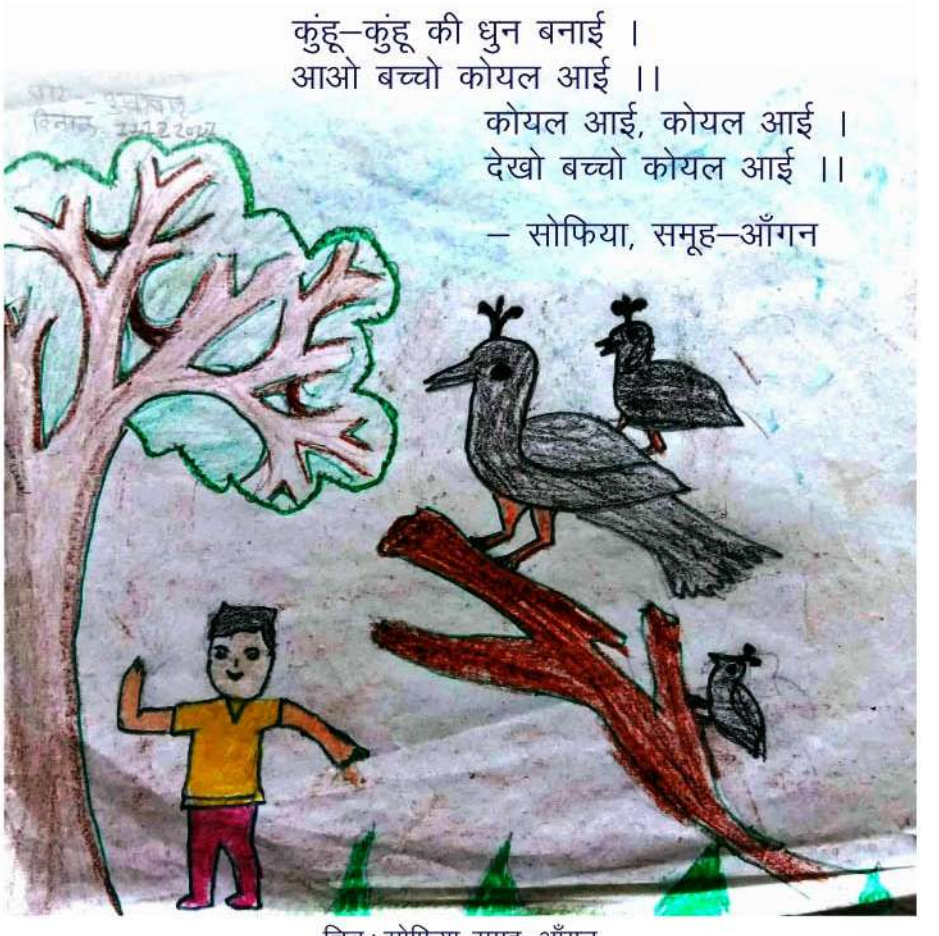

चित्र : सोफिया, समूह–आँगन

आपने अपने आस-पास कुछ परिवर्तनशील चीजों को डोला देखते हैं। पर उन पर हमारा ध्यान नहीं जाता है, इसलिये इस बार बातूनी आपके लिये कुछ सवाल लायी है। इनके जवाब आप ढूंढो और सोचो, फिर मुझे लिख के भेजो।